

सरकार ने सात आठ एजेंसियां जिमें भारत लैटर कारपोरेशन, यू पी स्टेट लैटर डिवेलेपमेंट कारपोरेशन तथा लघु उद्योग सेवा विस्तार केन्द्र प्रमुख हैं, इस व्यापार के विकास, विपणन, ऋण, प्रशिक्षण तथा प्रोत्साहन आदि देने हेतु स्थापित की हैं किन्तु उन्होंने भी कोई प्रभावी भूमिका भदा नहीं की है। राष्ट्रीयकृत बैंक तथा खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड भी इस व्यापार में लगे लोगों को ऋण प्रदान करते हैं किन्तु उद्योग के विकास में इनका समुचित प्रयोग नहीं होता। सरकार को चाहिए कि उसके प्रयोग पर कड़ी निगाह रखे। सब से अच्छा उपाय यही है कि सरकारी एजेंसियां, कारीगरों को कच्चा माल एवं आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए तथा स्वयं तैयार माल उचित मूल्यों पर खरीदें।

(xi) DELAY IN EXECUTION OF GUNTAKAL-BANGALORE GAUGE LINE

SHRI DARUR PULLAIAH (Anantapur): Mr Deputy-Speaker, Sir, the people of Andhra Pradesh and Karnataka are agitated over the inordinate delay in execution and completion of conversion of Guntakal-Bangalore broadgauge line. This scheme was started in the year 1971 at a cost of Rs 17.07 crores to be completed within 40 months. Though more than eleven years have passed, the scheme is nowhere near completion due to meagre allotment of funds. It is highly deplorable that schemes sanctioned and commenced later than this like Karur-Dindigal Cape Camrin Trivandrum to mention only a few, have no problem of funds but the construction work on Guntakal-Bangalore line has been stopped and the large number of workers have been retrenched.

This is very important line for the development of backward areas of Rayalaseema in Andhra Pradesh and Karnataka both industrially and agriculturally. This line shortens the distance from South to Delhi, Bombay, Ahmedabad by 300 kms and reduces the pressure between Madras and Vijaywada line.

In view of this, I urge the Government to allot sufficient funds for this line and

complete the work as early as possible without retrenching the workers engaged on the construction of the above said line.

(xii) POLLUTION OF WATER AND AIR IN GOA

श्रीमती संयोगिता राणे (पाणाजी): उपाध्यक्ष जी, गोवा प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। समुद्र तट पर स्थित होने के कारण इसकी छटा निराली है। यह विभिन्न संस्कृतियों का संगम स्थल है। कोलाहल से दूर शांत वातावरण के लिए यह सम्पूर्ण देश में विख्यात है। गोवा को दक्षिण का नंदनवन कहते हैं।

किन्तु वर्तमान में गोवा में जल प्रदूषण और हवा का प्रदूषण इतना अधिक बढ़ गया है कि इससे खदानों के आसपास रहने वाले लोगों में टी० बी० बढ़ रही है।

गोवा में मंगनीज और आयरन-ओर की खदानें प्रमुख हैं। यह मेरे निर्वाचन क्षेत्र में आती हैं। मुझे इसकी निजी जानकारी है। आजू-बाजू की कृषि विनष्ट हो गई है। एक और खदानों के मालिक करोड़ों रुपया कमा रहे हैं। वहां दूसरी ओर वहां की जनता पीने के स्वच्छ पानी की एक बाल्टी पानी को 50 पैसे दे कर खरीद रही है। वहां की जनता पानी के लिए त्राहि त्राहि कर रही है। विभिन्न रसायनों के मिश्रण से परम्परागत चावल की फसल समाप्त हो रही है।

इन खदानों के माल को धोने की प्रक्रिया से नदी में मिट्टी जाम जाने से ही जून 1981 में डीचोली शहर और आसपास के इलाकों में अभूतपूर्व बाढ़ आई थी जिसकी विनाश लीला आज भी ताजी है। इसका कारण भी खदानों का विवेकहीन इस्तेमाल है। इन खदानों में काम करने वाले मजदूरों को इस्ट प्रोटेक्शन मास्क डेली यूज को भी नहीं दिये जाते हैं। इस दूषित मिट्टी का असर धीरे धीरे मजदूरों के शरीर पर होता है। यह भी टी० बी० बढ़ने का एक कारण है। समीपवर्ती किसानों को उनके जमीन का और नारियल के दगीचे का